Naidunia (Indore), 06th January 2026, Naidunia City, Page – I

आइआइटी इंदौर के 'अभ्युदय-3' में विज्ञान और साहित्य का संगम

इलेक्ट्रान से पर्यावरण तक, कविताओं में गूंजा विज्ञान, समाज और राष्ट्रबोध

नईदुनिया प्रतिनिधि, इंदौर: भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान आइआइटी इंदौर में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय तकनीकी हिंदी संगोष्ठी 'अभ्युदय-3' के पहले दिन की शाम विज्ञान, साहित्य और समाज के अद्भुत संगम की साक्षी बनी।

कवि सम्मेलन में विज्ञान, पर्यावरण, जीवन-दर्शन और देशभक्ति जैसे जटिल विषयों को सहज, सरल और बोलचाल की हिंदी में प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत ख्यात कबीर गायक पद्मश्री भैरू सिंह चौहान ने 'एक घूंघट के पट खोल', 'मन लागो मारो यार फकीरी में', 'चदरिया झीनी रे झीनी' गाकर की। 40 मिनट की प्रस्तुति के बाद कविसम्मेलन शुरू हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत मोहन सगोरिया की कविता से हुई, जिसमें उन्होंने विज्ञान की सर्वव्यापकता को आम जीवन से जोड़ते हुए प्रस्तुत किया। प्रदीप मिश्रा की कविता ने विज्ञान और जीवन संघर्ष के बीच सुंदर सेतु बनाया। इलेक्ट्रान के रूपक के माध्यम से उन्होंने यह समझाया कि कभी-कभी उजाला बनने के लिए धारा के विपरीत जाना पड़ता है। वहीं पंकज प्रसून ने प्रदूषण और जीवनशैली पर तीखे व्यंग्य के साथ हंसी के बीच गंभीर संदेश दिया।

राजेश कुमार की हास्य-व्यंग्य से भरपूर कविता ने छात्रों की भाषा और पढ़ाई से जुड़ी दुविधाओं को मंच पर जीवंत कर दिया। कार्यक्रम का ओजपूर्ण शिखर बी.एल. मीणा की राष्ट्रभक्ति कविता रही।

आयोजन में कवियों ने एक से बढ़कर एक रचनाएं पेश की ● सौजन्य

अभ्युदय-3 में दूसरे दिन यह कार्यक्रम होंगे

दूसरे दिन भी तकनीकी हिंदी, विज्ञान और समाज से जुड़े विविध विषयों पर संवाद और रचनात्मक सत्र आयोजित किए जाएंगे।